

प्रिय राजा साहेब,

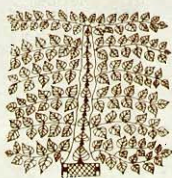
आपका पत्र पाकर बहुत खुशी हुई।
मेरा काम बहुत अच्छा चल रहा है। फ्रेंच शौ की-
तैयारी भी अच्छी चल रही है। उनके पहले पत्र का
समय से जवाब दे दिया था। स्वतंत्रता में उन्होंने लिखा
है कि चित्रों के फोटोग्राफ्स लेने के लिये वे लोग
फोटोग्राफर भेजेंगे। मेरे चित्र पूरे हो जायेंगे तो
मैं उन्हें एक पत्र द्वारा सूचित करूँगा।

फ्रेंच भाषा सीखना मैंने शुरू कर दिया है।
इसका एक सेमेस्टर पूरा हो गया है जिसमें मुझे
67% मिले हैं।-

- mais je peux écrire français
je ne parle pas français

अभी हम लोगों ने सिर्फ प्रेजेंट टेंस पढ़ा है तो बहुत ज्यादा
मुश्किल होता है। फ्रेंच में बात करना किन्तु पढ़ने में बहुत
मज़ा आ रहा है। हम लोगों का दूसरा सेमेस्टर पिछले
सप्ताह से ही शुरू हुआ है। अक्टूबर में दूसरा सेमेस्टर
रखत हो जायेगा तब तक शामद काफ़ी कुछ हम जान लेंगे।

मुझमें चैर्य बहुत है और मुझे किसी प्रकार
की कोई जल्दी नहीं है। आप पूरे इत्मीनान के साथ
लिखने में समा चाहता हूँ अपनी अधीरता के लिये।
मैं चाह रहा था कि पिछली बार आप जब हिन्दुस्तान
में थे आप मेरा जो देखें। किन्तु गैलेरी वालों ने
मेरी तारीखें बदल दीं जिससे सब बड़बड़ हो गया।
उसके बाद ऐसा कुछ हुआ मैं आपको (पिछली बार)
अपना ताज़ा काम दिखा ही नहीं पाया। मैं स्वयं

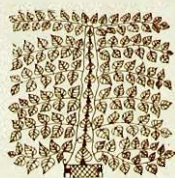


BHARAT BHAVAN

Shamla Hills, Bhopal 462 002 M.P. India
Phones: 77361, 76163 Gram: Nyas

आप से अपने काम के बारे में बात करना चाहता था।
 आप अब जब भी आयेंगे तब यह संभव हो सकेगा।
 मैंने आठ साल तक लगातार ब्लैक एंड व्हाइट में काम
 किया अब पिछले दो साल से रंगों में काम कर रहा हूँ।
 रंग को पूरी तरह जानना एक चित्रकार का ध्येय होता है।
 अक्सर चित्रों में चित्रकार रंगों को उसके मूल रूप में
 नहीं रख पाते हैं। रंग की असली ताकत चित्रों में नहीं
 दिखाई पड़ती है। जब हम लोग कॉलेज में थे तो हमें
 पढ़ाया जाता था कि बेस्ट कॉम्पोज़िशन खेद है। किन्तु
 जब हम लोगों की समझ देखने के अनुभव के साथ बढ़ी
 तो हमें पता चला कि असली रंग का रूप यह नहीं है।
 रंगों के पेस्टल शेड्स पेन्ट करना कॉम्पोज़िशन होने के लिये
 काफी नहीं और चित्रकार मात्र रंगों के इस्तेमाल से भी
 तसल्ली नहीं कर लेता। धीरे-धीरे हम सभी लोगों ने इस
 रोज़ शाम बैठकर चर्चा करना शुरू किया। उसमें तमाम
 भारतीय चित्रकारों के काम के बारे में हम लोग बात किया
 करते थे। फिर एक दिन हमें पता लगा कि भोपाल में आपके
 चित्रों की प्रदर्शनी है।

हम सभी लोग भोपाल आये और पहली
 बार इतने व्यापक रूप से हमें आपके चित्र देखने को मिले।
 उसी दिन हमें पता भी चला कि रंग का संवेदनशील
 इस्तेमाल भी किया जा सकता है। रंग का 'रूप' क्या है?
 उसकी ताकत क्या है? वह मुझाईश आज तक हम लोगों के
 दिमाग में लागा है जैसे कल ही की बात हो। इसके बाद हमारे
 सामने दो कलाकारों के सामने बिलकुल स्पष्ट हुये एक दुसरे
 सहोदर जो रेखाओं के जादूगर हैं। जिन्होंने रेखा, लकीर का सशक्त
 इस्तेमाल किया और दूसरे आप जिन्होंने रंग का रूप
 उजागर किया, रंग की ताकत, रंग का सही इस्तेमाल



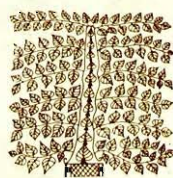
BHARAT BHAVAN

Shamla Hills, Bhopal 462 002 M.P. India
 Phones: 77361, 76163 Gram: Nyas

रंगों की कविता, रंग के मूल स्वरूप से पहचान कराती। मेरा ख्याल है चित्रकार मूलतः स्पेस को लेकर काम करता है स्पेस-जिसे हमारे मिनिमेचर में कवितामय चित्रित किया गया है-जिसे लियोनार्दो ने 'मिनिमर पर्सपेक्टिव' से एक नया आयाम दिया-जिसे पाल क्ले ने एक बार पुनः हमारे मिनिमेचर्स के मुकाबले लाकर खड़ा किया (wall in gallery में- जिसे मालेविच ने स्फेड पर स्फेड रंग लगाकर एक नई दिशा दी और इसी के बाद रंगों के रूप से आपने इसे सँवारा।

मेरे विचार से चित्रकार दुश्मन नहीं चित्रित करता है- उसके लिये जरूरी है कि वह 'देखना' चित्रित करे। यह 'देखना' उसे दुश्मन जगत से बाहर अंतरा में ले जाता है उसे किसी भी रंग में उतनी ही कुशलता से- जहाँ वह पूरी तरह उन्मुक्त भी हो- चित्रित करना अनुभव से ही आ सकता है- यह अनुभव उसकी अपनी अंतरंगता के लीले सकते हैं- जहाँ वह इस जगत में भौतिक रूप से होकर भी नहीं होता है। आपके चित्रों के सामने मुझे यह कुछ अनुभव होते हैं। आपके चित्रों के रिप्रोडक्शनस (जो केटलॉग में दिये हैं) मैंने फ्रेम करवा कर घर में लगा रखे हैं- जिनसे मेरा साबका हर समय होता रहता है। भारत भवन में मूल चित्र हैं- ही उन्हें भी देखता हूँ। आपका एक चित्र जो रामकुमार जी के घर है वह तो अद्भुत है- उसे मैंने पूरी तरह नहीं देखा है- किन्तु जितनी भी देर मैं वहाँ आ मैं उसे देखता रहा।

रंगों की यह पूरी समझ मैं अपने जीवन में पाता चाहूँगा अभी मेरा अनुभव उतना नहीं है और न ही मैं अपने आपको अभी दुश्मन जगत से पूरी तरह बाहर ला पाया हूँ- इसका प्रयास मेरा चल रहा है- इसके लिये मुझे एक संगीतकार की तरह लगातार रियाज़ भी करनी है- जिसे मैं कर भी रहा हूँ। देखें आगे क्या होता है-?



BHARAT BHAVAN

Shamla Hills, Bhopal 462 002 M.P. India
Phones: 77361, 76163 Gram: Nyas

यहाँ मानसून शुरू हो गये हैं बीच बीच में-
 जोरदार बारिश भी हो जाती है। माहौल काफी-
 ठंडा हो चुका है। इन दिनों काम करने के लिये अच्छा
 वक़्त भी निकल आता है। नया काम काफी अच्छा
 और सार्थक हो रहा है। आशा है आपको पसंद आयेगा।
 मैं आपसे एक सलाह भी चाहता हूँ। मैं सोच रहा था
 कि फ़ेच शो में मैं अपने नये काम ली हूँ यह
 ज्यादा बेहतर होगा जैसे उन्होंने पिछले एक दशक
 में जो काम किये हैं उसमें से पाँच चाहे हैं। मगर
 मुझे अब अपना नया काम ज्यादा सार्थक लगता है।
 तो क्या मैं सिर्फ नया काम ली हूँ या यदि आप चाहे-
 तो मैं पुराने काम भी दे सकता हूँ। आप क्या सोचते हैं?
 आप जैसा लखेंगे वही करूँगा। मेरे नये काम में से तीन
 तो तैयार हो चुके हैं और बाकि भी मैं कर ही रहा हूँ।

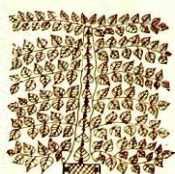
जानिन जी को मेरा नमस्कार।

आपके पत्र के इंतज़ार में -

आपका

—Akhilesh—

30 जून 1989 को भोपाल से



AKHILESH

BHARAT BHAVAN

Shamla Hills, Bhopal 462 002 M.P. India
 Phones: 77361, 76163 Gram: Nyas